वास्तविक योगी का स्वरूप एवं विवेचन

स्नेहा*

योग सार्वकालिक उपयोगी विद्या है और योगी समाज में समरसता तथा जाति की संकीर्ण भावना के विनाश के लिए सदैव तत्पर होता है। योगी में करूणा होती है, जो समाज के दलित–वंचित तथा निर्बल गर्ब को सामाजिक, आर्थिक रूप से समुन्नत्र करने में सहायक होती है। योगी सर्वत्र एक ईश्वर का दर्शन करता है, अतएव उसका चित्त कभी संकीर्ण नहीं होता।

21 जून को संयुक्त राष्ट्रसंघ ने विश्व योग–दिवस के रूप में मान्यता प्रदान की है। योग भारत की ही प्राचीन विधा–विद्या है, जिससे तन तथा मन स्वस्थ और प्रसन्न रहते हैं। स्वस्थ तन में ही स्वस्थ मस्तिष्क रहता है। स्वस्थ तन तथा स्वस्थ मन वाला व्यक्ति स्वयं, परिवार, समाज, देश तथा विश्व का कल्याण सकता है। योग मन को साधने की वह विशिष्ट कला है, जिससे वह कुर्मार्ग से हटकर सुमार्ग की ओर जाता है। योगी का तात्पर्य है, चिन्तनशील महात्मा, भक्त सन्यासी, योगदर्शन के सिद्धान्तों का अनुयायी आदि। योगी बनना सहज और सरल नहीं होता। क्षुरिकोपनिषद् का कथन है कि प्राणायाम द्वारा अत्यन्ततीक्ष्ण बनायी, ऊँकार रूप धरवाली और वैराग्य पत्थर पर घिसी हुई छुरी से संसाररूपी सूत्र को काटकर योगवेत्ता मनुष्य फिर नहीं बँधता। यहाँ उपनिषद्कार ने क्षुरे का दृष्टान्त दिया है, जिस प्रकार सामान्य व्यक्ति छुरे से रस्सी काटता हे, उसी प्रकार योगी ऐसे छुरे से संसाररूपी रस्सी को काटता है, जो प्राणयाम द्वारा तीक्ष्ण (चोख) बनायी गयी हो, जिसमें ऊँकार रूपी धार हो तकि वैराग्यरूपी पत्थर पर घिसी गयी हो। कथनीय है कि योगी को प्राणायाम में निपुण, ऊँ का मर्मज्ञ तथा वैराग्य का अभ्यासी होना चाहिए। योग के क्षेत्र में वही प्रवीण और सफल हो सकता है, जिसने भय, क्रोध आलस्य, अत्यन्त निद्रा, अधिक जागना, अति भोजन करना, सर्वथा भोजन न करने की प्रवृत्ति को त्याग दिया हो। शंकराचार्य ने कहा था कि शिवोऽहं 'मैं शिव स्वरूप हूँ' यह एक भाववृत्ति है। योगी सवयं को परमातमामय मानता है। जब यह विश्वास हो गया कि शिव मेरे भीतर स्थित है,तो उसे फिर दूसरी जगह शिव को खोजने की आवश्कता नहीं रह जाती। जबालदर्शनोपनिषद का विचार है कि योगी व्यक्ति अपने आत्मतीर्थ में अधिक विश्वास के कारण जला से भरे तीर्थों तथा लकड़ी आदि से बनी प्रतिमाओं का पूजन नहीं करते। योगी योग माध्यम से जाग्रत, स्वप्न तथा सुषुप्ति अवस्था के सुख–दुख मोह–माया, चाक–चक्यि या आकर्षण अपनी ओर खींच नहीं पाते। उसका सवयं का भाव तथा स्वरूप होता है, उसे बाहरी पदार्थों का सौन्दर्य सारहीन प्रतीत होता है। सच यह है कि उसे इन पदार्थों से कोई मतलब रहता ही नहीं। यदि मतलब हुआ भी, तो बस इतना ही कि यह भी शिव स्वरूप है और जब योगी को सर्वत्र शिव का दर्शन होने लगता है, तब वह किसी से क्यों घृणा या शत्रुता करेगा?

बीज का आशय जीवाणु, तत्त्व, मूल स्त्रोत तथा कारण आदि होता है। मन्त्र के प्रथम अक्षर को बीजाक्षर तथा शिव को बीजाध्यक्ष कहते हैं। ध्यान बिन्दु उपनिषद् की मान्यता है कि बीजाक्षर परम विन्दु है, उसके ऊपर 'नाद' स्थित है, जो सशब्द है। उसके अक्षर ब्रह्म में लय हो जाने पर ही शब्दहीन परमपद की स्थिति है। अनाहत शब्द से भी परे जो है, उसको जो योगी जान लेता है, पा लेता है, उस योगी के सभी संशय नष्ट हो जाते हैं। नाद शब्द का सामान्य अर्थ ऊँची दहाड़ चिल्लाहट एवं चीख आदि ही होता है; पर योगशास्त्र में नाद का तात्पर्य अनुनासिक से है, जिसे हम चन्द्रविन्दु के द्वारा प्रकट करते हैं–उदाहरण स्वरूप अनाहत का आशय है आधात रहित, कोरा या नया अनाहत को हिन्दी में अनहद कहते हैं। अनहद नाद योगियों को ही सुनायी पड़ता है। योगी के लिए कोई बात अनजानी नहीं रह जाती। वह त्रिकालदर्शी हो जाता है अभिज्ञान शाकुंतल में कहा गया है कि ऐसी कौन सी बात है, जिसे बुद्धिमान लेाग न जानते हों। ज्ञान का तात्पर्य है जानना, समझना, परिचित होना तथा प्रवीणता आदि। सांख्य योग, ज्ञानस्वरूप है। परम ज्ञान, विशेषकर उस धर्म और दर्शन की ऊँची सच्चाइयों पर मनन से उत्पन्न ज्ञान, जो मनुष्य को अपनी प्रकृति या वास्तविकता को जानना तथा आत्मसाक्षात्कार या परमात्मा से मिलन की बात सिखलाता है। विज्ञान का अर्थ है ज्ञान, बुद्धिमत्ता, प्रज्ञा, समझ। उपनिषदों में विज्ञानमय कोश की चर्चा आती है। कुशलता तथा प्रविणता को कालिदास द्वारा प्रयोग विज्ञान कहा गया है। श्रीमद्भागवद्गीता का सातवाँ अध्याय ज्ञान और विज्ञान की व्याख्या करता है। गीता में कहा गया है कि जो ज्ञान और विज्ञान से तृप्त हो चुका है,जो जितेन्द्रिय हे तथा जिसकी दृष्टि में मिट्टी पत्थर और सोना समान है ,उस यात्री का योग सिद्ध हुआ ऐसा कहते हैं। योगी को साधकों की श्रेणी में सर्वोच्च माना जाता है। गीता में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि 'योगी तपस्यिों से श्रेष्ठ है और शास्त्र के ज्ञानियों से भी श्रेष्ठ माना जाता है तथा कर्म करनेवालों से भी योगी श्रेष्ठ है। अतः हे अर्जुन! तू योगी हो। इससे से स्पष्ट है कि जिस लक्ष्य को तपस्या, शास्त्र तथा कर्म से प्राप्त नहीं किया जा सकता, उसे योग के माध्यम से प्राप्त किया जाता है। इससे स्पष्ट है योगी सर्वोच्च

(शोधच्छात्रा) संस्कृत विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

होता है। योगी संसार में रहते हुए भी असंसारी होता है। अनुरक्तों के मध्य रहते हुए भी वह विरक्त होता है। भर्तृहरि ने योगी को भोगी के समान कहा है, पर योगी का भोग देखिए 'योगी व्यक्ति विरक्तरूपी स्त्री के साथ बड़े वैभवशाली राजाओं की तरह सुखदपूर्वक शान्ति के साथ सोता है। पृथ्वी ही उसकी सून्दरन शय्या है, भुजाएँ बड़ी तकिया हैं। आकाश ही वितान (चँदोना, शामियाना) है, अनुकूल पवन ही उसका पंखा है, चन्द्रमा ही उसका प्रकाशमान दीपक है। भर्तृरि ने प्राकृतिक तत्वों को ही योगी का जीवनधार माना है। उसे सूख–शान्ति–सन्तोष की प्राप्ति प्रकृति से होती है, व्यक्ति से नहीं। परन्तु, यह भी ध्यान देने के योग्य है कि योगी को व्यक्ति में प्राणीमात्र में ईश्वर के, शिव के दर्शन होते हैं; यही कारण है कि वह पशु–पीड़ा को भी अपने जैसा ही मानता है। यही कारण है कि उत्तर प्रदेश के मुख्यमत्री योगी आदित्यनाथ ने पशुओं के काम आनेवाली अनेक दवाओं को फ्री में निर्मूल्य कर दिया है। आज तक ऐसा विचार किसी प्रधानमन्त्री या मुख्यमन्त्री के विचार में आया, मुझे पता नहीं है।

गुरू गोरखनाथ सिद्ध योगी थे। उन्होंने गोरखनाथ में योगी का लक्षण बतलाते हुए कहा है कि 'योगी संसार में रहते हुए भी न रहने–जैसा रहता है, वह आँख से देखता है और कान से सूनता भी है, पर मुँह से कुछ कहता नहीं। गुरु गोरखनाथ स्वयं को अकेले मान रहे हैं, क्योकि "उन्हें ज्ञान के समान गुरु नहीं मिला, और चित्त के समान चेला नहीं, मन के समान मित्र नहीं मिला है।" इस गुरु की वाणी का आशय है कि योगी वह है, जो ज्ञान को गुरुबनावे और चित्त को अपना अनुयायी। मन को मित्र–अर्थात् सच्ची सलाह देनेवाला बनावे।

दक्षिण भारत के अनेक मनीषियों ने योगी के लक्षणों पर विचार किया है। तेलुगु रचनाकार वेमना की मान्यता है कि 'पाँच शत्रुओं (इन्द्रियों) तथा बाण वाले कामदेव को जीतकर पंच बर्णों (ऊँ नमः शिवाय) के पठन द्वारा सद्योजात, कामदेव, ईशानादि पंचमुख वाले ही सच्चा योगी हैं।

सच्चा योगी वह है, जो रिश्ते–नातें को छोड़ दे। वह दुनिया में उसी भाँति रहता है, जैसे कमल पानी में रहता है। जिसने आशा को छोड़ दी। दूसरे शब्दों में योगी किसी व्यक्ति विशेष को पाने की चाह नहीं रखता है। वह स्वयं में रमण करता है। मन पर नियन्त्रण करना योगी का प्राथमिक लक्षण है। जो शान्त स्वभाव से गर्व को छोड़ दे, वही योगी है। महाराष्ट्र के सन्त ज्ञानेश्वर की ज्ञान–भक्ति ताकि योग के क्षेत्र में विशिष्ट प्रतिष्ठा है। उन्होंने श्रीमदभगवद्गीता की ढीका ज्ञानेश्वरी में कहा है कि जिसे योगी कहते हैं, उसे देवों का भी देव समझना चाहिए।

योगमत पर चलने वाला योगी होता है। योगाभ्यास करनेवाला व्यक्ति भी योगी कहलाता है। प्रायः हठयोगियों के लिए योगी शब्द का प्रयोग होता है। भारत

में योग–विद्या से सम्बन्ध रखनेवाले अनेक सम्प्रदाय हैं, जिनमें नाथमत की विशेष चर्चा होती है। नाथ सम्प्रदाय के योगियों की परम्परा में नवनाथों का नाम प्रमुखतः लिया जाता है। गोरखनाथ (गोरखनाथ),ज्वालेन्द्रनाथ, करिणनाथ, गहिनीनाथ,चर्पटनाथ, रेवणनाथ, नागनाथ, भर्तृनाथ और गोपीचन्द्र नाथ ।

सम्प्रति गोरखपुर का गोरखनाथ मन्दिर नाथ योग परम्परा का सिद्धपीठ है। योगी गोरखनाथ ने अनेक पुस्तकें लिखी हैं। प्रसिद्ध इतिहासविद् डॉ0 राजबली पाण्डेय ने हिन्दू धर्मकोष के पृ0स0 249 पर लिखा है कि ''गोरखनाथ मन्दिर में अखण्ड द्वीप जलता रहता है। गोरखपन्थ का साम्प्रदायिक पीठ होने के कारण यह मठ और इसके महन्त भारत में अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। ''वर्तमान समय में गोरखनाथ मन्दिर के महन्त योगी आदित्यनाथ उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री हैं।

आत्मसुधार से ही विश्वकल्याण सम्भव है। योगी स्वयं असुविधाओं को स्वीकार कर समाज को सुख–सुविधा देने का भरसक प्रयत्न करता है। यदि भारत को पुनः विश्वस्तरीय प्रतिष्ठा दिलानी है तो योग विद्या को सर्वसुलभ कराना होगा और प्रत्येक नागरिक को स्वयं को योगी समझना होगा।

सन्दर्भ –

1. संस्कृत हिन्दी शब्दकोश–आप्टे, पृ0 840
2. प्राणायाम–सुतीक्ष्णेन माखाधारेण योगवित्।
   वैराग्योपलघृष्टेन छित्वा तन्तुं न बध्यते।। क्षुरिकोपनिषद्–24
3. संस्कृत हिन्दी शब्दकोश–आप्टे, पृ0 840
   अत्याहारमनाहारं नित्यं योगी बिवर्जयेत् ।। अमृतनादोपनिषद्
4. तीर्थानि तोयपूर्णानि देवान् काष्ठादिनिर्मितान्।
   योगिनो न प्रपूज्यन्ते स्वात्म प्रत्यय कारणात् ।। जाबाल दर्शनोपनिषद् 4/52
5. संस्कृत–हिन्दी–शब्दकोष–आप्टे, पृ0 717–718
6. बीजाक्षरं परं बवन्दु नादं तस्योपरिस्थितम् । सशब्द चाक्षरे क्षीणे निःशब्दं परमं पदम्।। तत्पर परं विन्दुं नादं तस्योपरिस्थितम्।
7. सशब्दं चाक्षरे क्षीणे निःशब्दं परमं पदम्।।
8. अनहतं तु यच्छब्दं तस्य शब्दस्य यत्परम्!।
9. तत्परं विदन्ते यस्तु य योगी छिन्न संशयः।। ध्यानबिन्दु उपनिषदर् 2–3